Lakshmi Aarti

श्रीलक्ष्मीजीकी आरती (ॐ जय लक्ष्मी माता)

NityaPaath
nityapaath.com/lakshmi-aarti/

REFRAIN · टेक

टे॰ ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसिदिन सेवत हर-विष्णू-धाता॥ ॐ॥

VERSES · आरती

1 उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ॐ॥

2 दुर्गारूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता।
जो कोइ तुमको ध्यावत, ऋधि-सिधि-धन पाता॥
ॐ॥

3 तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधिकी त्राता॥ ॐ॥

4 जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता॥ ॐ॥

5 तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान-पानका वैभव सब तुमसे आता॥ ॐ॥

6 शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता॥ ॐ॥

7 महालक्ष्मी (जी) की आरति, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥ ॐ॥

Text checked against: Gita Press, Gorakhpur: Aarti Sangrah (code 153), 'श्रीलक्ष्मीजी'. Meanings, audio and all scripts at nityapaath.com/lakshmi-aarti/